03-02-2023

मनरेगा फंड में कमी

समाचार पत्रों में क्यों?

केंद्रीय बजट 2023-24 में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) योजना के लिए 60,000 करोड़ रुपये आवंटित किए।

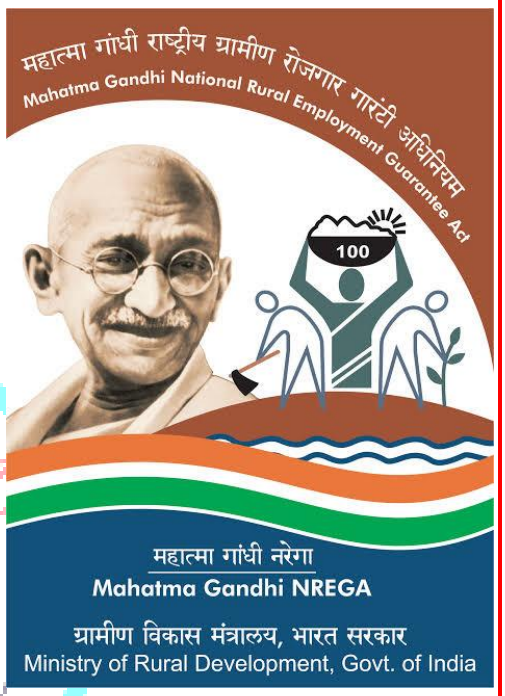

त्वरित मुद्दा?

- यह वर्ष 2022-23 के लिए निर्धारित बजट Rs.73,000 करोड़ से 18% कम तथा Rs.89,000 करोड़ के संशोधित बजट अनुमान से 33% कम है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- **मनरेगा;-** यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जो वैधानिक न्यूनतम मजदूरी पर सार्वजनिक कार्य से संबंधित अकुशल शारीरिक कार्य करने के इच्छुक किसी भी ग्रामीण परिवार के वयस्क सदस्यों को प्रत्येक वित्तीय वर्ष में सौ दिनों के रोजगार की कानूनी गारंटी प्रदान करती है।
- मांग किए जाने के 15 दिनों के भीतर रोजगार उपलब्ध ना होने की स्थिति में आवेदनकर्ता 'बेरोजगारी भत्ता' (राज्य सरकारों द्वारा वहन) प्राप्त करने का अधिकारी होगा।
- बेरोजगारी भत्ता शुरुआती 30 दिनों के लिए न्यूनतम मजदूरी का 1/4 और बाद की अवधि के लिए न्यूनतम मजदूरी का ½ प्रदान किया जाता है।

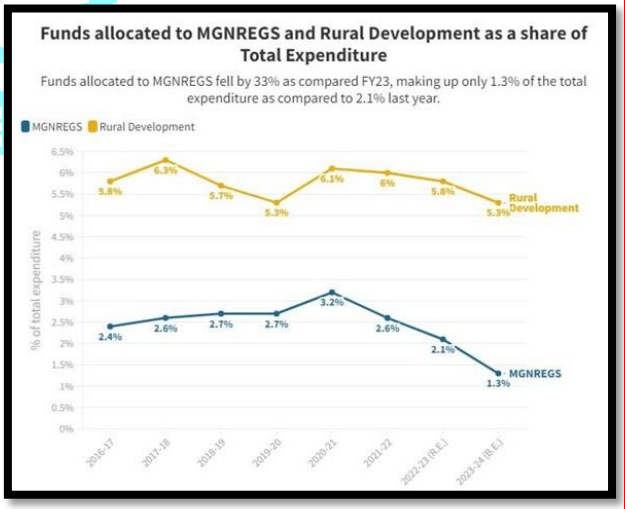

- कार्यान्वयन एजेंसियां श्रमिकों को उचित पेयजल, सुरक्षित कार्य वातावरण, चिकित्सा सुविधाएं, अनुग्रह भुगतान आदि जैसी सुविधाएं प्रदान करने के लिए भी जिम्मेदार हैं।
- मनरेगा के तहत कम से कम एक तिहाई लाभार्थी महिलाएं होनी चाहिए।
- रोजगार 5 किमी के दायरे में प्रदान किया जाएगा, यदि यह 5 किमी से ऊपर है तो अतिरिक्त मजदूरी का भुगतान किया जाएगा।
- इस योजना के अंतर्गत व्यय का बंटवारा केंद्र और राज्यों के बीच निर्धारित अनुपात में किया जाता है।
- केंद्र सरकार द्वारा अकुशल श्रम की लागत का 100 प्रतिशत, अर्ध-कुशल और कुशल श्रम की लागत का 75 प्रतिशत, सामग्री की लागत का 75 प्रतिशत और प्रशासनिक लागत का 6 प्रतिशत वहन किया जाता है।

- मनरेगा के कार्यों की सामाजिक लेखापरीक्षा (Social Audit) अनिवार्य है इससे जवाबदेही और पारदर्शिता में वृद्धि होती है।
- इसका उद्देश्य रोजगार सृजन के अतिरिक्त, परिसंपत्तियों की गुणवत्ता में सुधार करना, उद्यमशीलता के लिए श्रमिकों का कुशल विकास करना भी है।
- इस योजना ने मजदूरी की अस्थिरता और श्रम में लिंग वेतन अंतर को कम किया है।
- **उद्देश्य;-** किसी ग्रामीण परिवार द्वारा मांगे जाने पर गारंटी युक्त रोजगार के रूप में 1 वर्ष में कम से कम 100 दिनों का अकुशल कार्य उपलब्ध कराना।ग्रामीण आबादी के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना।

- ग्रामीण क्षेत्रों के प्राकृतिक संसाधन आधार का कायाकल्प सुनिश्चित करना। समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए आजीविका का स्रोत प्रदान करना।
- ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में श्रमिकों के प्रवास को कम करना।

अन्य प्रमुख तथ्य?

मनरेगा के अंतर्गत शामिल गतिविधियां

* ग्रामीण पेयजल परियोजनाएं।
* ग्रामीण स्वच्छता परियोजनाएं।
* पशुधन संबंधी कार्य।
* आंगनबाड़ी केन्द्रों का निर्माण आदि।
* कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ।
* सिंचाई एवं बाढ़ प्रबंधन कार्य।
* मछली पालन।

मनरेगा के अंतर्गत ग्राम पंचायत की भूमिका

- पंजीकरण के लिए आवेदन प्राप्त करना।
- पंजीकरण आवेदनों का सत्यापन करना।
- परिवारों का पंजीकरण करना।
- जॉब कार्ड जारी करना।
- कार्य हेतु आवेदन पत्र प्राप्त करना।
- कार्य हेतु इन आवेदनों की दिनांकित रसीदें जारी करना।
- आवेदन जमा करने के पंद्रह दिनों के भीतर या अग्रिम आवेदन के मामले में काम मांगे जाने की तारीख से काम आवंटित करना।
- कार्यों की पहचान और योजना, परियोजनाओं की सूची विकसित करना, जिसमें उनकी प्राथमिकता के क्रम का निर्धारण शामिल है।

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय

समाचार पत्रों में क्यों?

वित्त मंत्री ने केंद्रीय बजट 2023-24 के भाषण के दौरान कहा कि केंद्र सरकार अगले तीन वर्षों में देश भर में आदिवासी छात्रों के लिए एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों (EMRS) के लिए 38,800 शिक्षकों और सहायक कर्मचारियों को नियुक्त करेगी।

त्वरित मुद्दा?

- एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय भारत सरकार की एक योजना है। यह योजना पूरे भारत में अनुसूचित जनजातियों को शिक्षित बनाने में विशेष रूप से सहायक है। यह योजना केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्रालय से संबंधित है। योजना का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आदिवासी छात्रों को दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय (ईएमआरएस) को जनजातीय मामलों के मंत्रालय के अंतर्गत वर्ष 1997-98 में शुरू किया गया था।
- भारत के संविधान के अनुच्छेद 275(1) के तहत प्राप्त अनुदान से एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (ईएमआरएस) राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में स्थापित किए जाते हैं।
- 2018-19 के बजट के अनुसार, 50% से अधिक एसटी आबादी और कम-से-कम 20,000 आदिवासी आबादी वाले प्रत्येक ब्लॉक में वर्ष 2022 तक एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय की स्थापना की जाएगी।
- एकलव्य विद्यालय में शिक्षा प्रदान करने के अलावा स्थानीय कला और संस्कृति के संरक्षण के लिए विशेष सुविधाएं होती है, इन विद्यालयों में खेल और कौशल विकास का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है।

अन्य प्रमुख तथ्य?

महत्व

- एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय से आदिवासी समूहों के बीच साक्षरता में सुधार होगा।
- यह आदिवासी छात्रों का सभी क्षेत्रों में समावेशी विकास सुनिश्चित करेगा।
- यह प्रत्येक शैक्षिक चरण में छात्रों का मार्गदर्शन करने के साथ-साथ बुनियादी ढांचा सुविधाएं भी प्रदान भी करेगा।
- इससे आदिवासियों के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी।

- इन विद्यालयों में CBSE पाठ्यक्रम का अनुसरण किया जाता है, तथा शिक्षा पूर्ण रूप से नि:शुल्क होती है।
- कक्षा छठी से बारहवीं तक के छात्रों के लिए 480 छात्रों की क्षमता के साथ यह स्कूल स्थापित किए गए है, इनमें लड़कों और लड़कियों के लिए सीटों की संख्या समान होगी।
- इन स्कूलों में गैर-एसटी छात्रों को कुल सीटों के 10% तक सीटों पर प्रवेश दिया जा सकता है।

- राज्य स्वीकृत संख्या के अतिरिक्त ईएमआरएस का भी संचालन कर सकते हैं, अगर राज्य के सभी विद्यालय सुचारू रूप से काम कर रहे हैं, तो राज्य, केंद्र सरकार से ऐसे और विद्यालयों की स्थापना करने की मांग कर सकते है।
- जनजातीय छात्रों के लिए एक राज्य शिक्षा सोसाइटी (एसईएसटीएस) की स्थापना की गयी है, जो जमीन पर ईएमआरएस के प्रबंधन को देखता है।
- जनजातीय मामलों के मंत्रालय के तहत, एक स्वायत्त निकाय के रूप में नेशनल एजुकेशन सोसाइटी फॉर ट्राइबल स्टूडेंट्स (एनईएसटी) की स्थापना स्कूलों के प्रशासन में एकरूपता लाने के लिए स्कूलों को समग्र समर्थन और नीति निर्देश प्रदान करने के लिए की गई है।
- जनजातीय मामलों के मंत्रालय ने मई, 2021 में Microsoft के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए, ताकि एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों (EMRS) और आश्रम स्कूलों जैसे जनजातीय स्कूलों के डिजिटल परिवर्तन में मदद मिल सके।
- **उद्देश्य;**-ईएमआरएस का उद्देश्य अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण, मध्यम और उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान करना है।

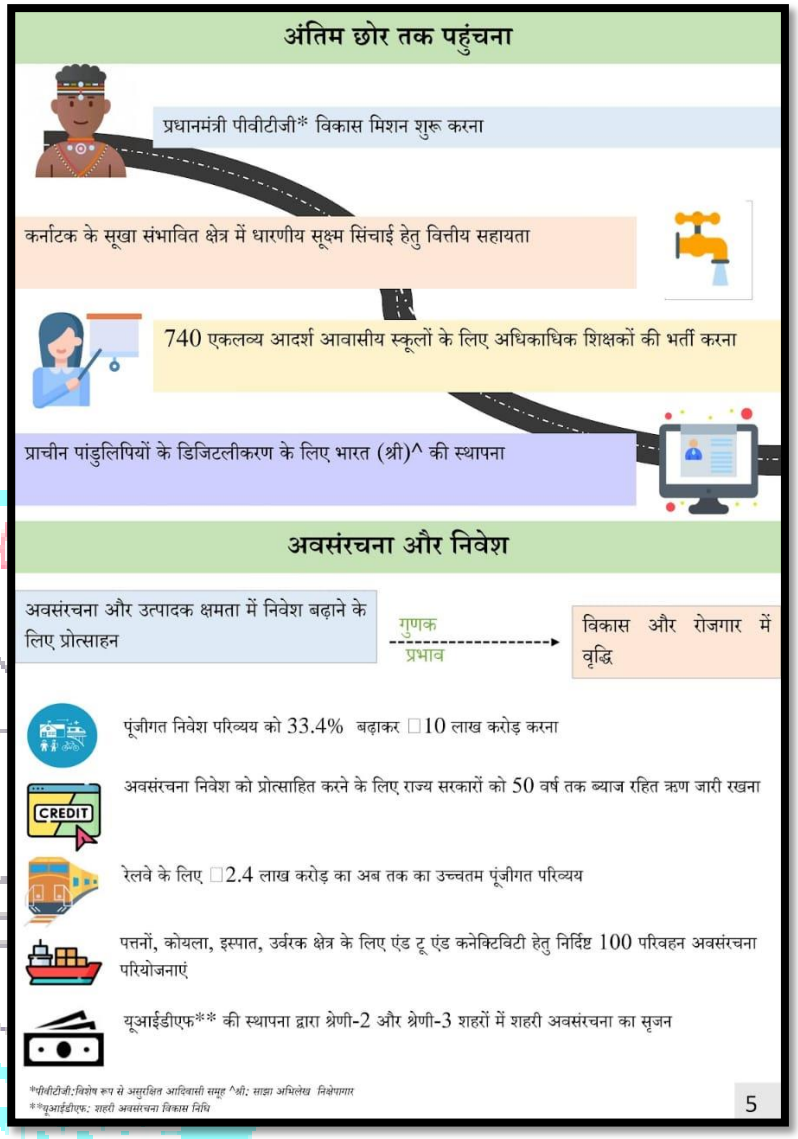

- इन स्कूलों के माध्यम से, दूरदराज के क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियों के छात्र, ना केवल उच्च और व्यावसायिक शैक्षिक पाठ्यक्रम और सरकारी व सार्वजनिक नौकरियों के लिए आरक्षण का लाभ उठाने में सक्षम होंगे, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में गैर एसटी आबादी के बराबर सर्वोत्तम अवसरों तक पहुंच प्राप्त कर सकेंगे।
- ईएमआरएस में नामांकित सभी छात्रों का व्यापक शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से विकास इसका अंतिम ध्येय है।

भारत-अमेरिका वार्ता पहल

समाचार पत्रों में क्यों?

हाल ही में भारत और अमेरिका ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किया है। इससे दोनों देशों के विज्ञानियों और इंजीनियरों के बीच रिसर्च प्रोजेक्ट के चयन और वित्त पोषण की प्रक्रिया को सुगम करने में मदद मिलेगी। राष्ट्रीय विज्ञान संस्था (एनएसएफ) ने कहा कि यह समझौता बेहद महत्वपूर्ण कदम है।

त्वरित मुद्दा?

- यह दोनों देशों की वैज्ञानिक एजेंसियों और संस्थाओं को करीब लाएगा। साथ ही तकनीकी क्षेत्र में संयुक्त शोध को बढ़ावा देगा। इससे लोगों की समृद्धि में मदद मिलेगी।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- लंबे समय से प्रतीक्षित नासा-इसरो सिंथेटिक एपर्चर रडार (NISAR) पृथ्वी अवलोकन उपग्रह पर काम पूरा करना इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि अंतरिक्ष में भारत-अमेरिका साझेदारी विश्व को कैसे लाभान्वित कर सकती है।
- iCET पहल भारत और अमेरिका द्वारा मई 2022 में शुरू की गई थी, इसका संचालन दोनों देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों द्वारा किया जा रहा है।
- iCET के तहत अमेरिका के साथ भारत अपनी प्रमुख तकनीकों को साझा करने के लिये तैयार है और उम्मीद करता है कि वाशिंगटन भी ऐसा ही करेगा।
- सहयोग के छह क्षेत्र जो कि वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास से संबंधित हैं, में क्वांटम एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिफेंस इनोवेशन, स्पेस, एडवांस्ड टेलीकॉम जैसे- 6G और सेमीकंडक्टर्स क्षेत्र शामिल होंगे।
- iCET दोनों देशों की सरकार, शिक्षा जगत और उद्योग के बीच घनिष्ठ संबंधों में सुधार करेगा।
- इसका उद्देश्य विश्व को किफायती अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों की सुविधा प्रदान करना है।

अन्य प्रमुख तथ्य?

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार

- 'राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार' (NSA) 'राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद' की अध्यक्षता करता है और यह प्रधानमंत्री का प्राथमिक सलाहकार भी है। वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल हैं।
- वर्तमान NSA के प्रमुख अजीत डोभाल हैं।
- भारतीय NSC एक त्रिस्तरीय संगठन है जो रणनीतिक राजनीतिक, आर्थिक, ऊर्जा और सुरक्षा संबंधी समस्याओं की देख-रेख करता है।
- इसका गठन वर्ष 1998 में किया गया था और यह राष्ट्रीय सुरक्षा के सभी पहलुओं पर विचार-विमर्श करता है।
- NSC, सरकार की कार्यकारी शाखा और खुफिया सेवाओं के बीच संपर्क स्थापित करते हुए प्रधानमंत्री के कार्यकारी कार्यालय के तहत कार्य करता है।

- महत्त्वाकांक्षी iCET वार्ता की शुरुआत को प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में "रणनीतिक, वाणिज्यिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संरेखण" के रूप में देखा जाता है।
- यह अंततः ऑस्ट्रेलिया, जापान, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के अनौपचारिक गठबंधन क्वाड के विकास के रूप में परिलक्षित होगा।